उद्‌घाटन समारोह में माटी की सुगंध

चौंतिसवें राष्ट्रीय खेलों का उद्‌घाटन समारोह जिस ढंग से संपन्न हो गया, उससे पूरे राज्य के मंत्रियों से लेकर आला अधिकारियों ने राहत की सांस ली। राज्य का कोई भी आदमी गर्व के साथ अपना सर उंचा रख सकता था। बाहर से आये सभी खेल अधिकारियों और खिलाड़ियों ने यह स्वीकार किया कि खेलों के आयोजन के लिये जो स्टेडियम बने हैं वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के हैं और उनकी एक खासियत यह भी है कि अधिकांश स्टेडियम एक स्टेट आर्ट के तर्ज पर बनाये गये हैं और सभी मानको को ध्यान में रखते हुए उन्हें बनाया गया है।

चूंकि रांची एक छोटा शहर है इसलिये खिलाड़ियों के स्वागत और अवभगत में किसी तरह का कसर नहीं छोड़ा गया। इसलिये आगंतुकों को यहां आना रास आया। उनके सम्मान का पूरा ध्यान रखा गया।

उद्‌घाटन समारोह में मुंबईया कलाकारों को बुलाने की खबर सुनकर स्थानीय कलाकारों ने विरोध प्रकट किया था और वे मोर्चे पर आ गये थे। उद्‌घाटन समारोह में जिस तरह से उन्हें सम्मान दिया गया उससे उनका मान बढ़ा। बिरसा मुंडा की संक्षिप्त गाथा पेश कर कलाकारों ने बिरसा मुंडा का कद और उसके साथ आदिवासियों का कद उंचा कर दिया। लोक कलाकारों ने अपने गीत और संगीत का समा बांधकर यह दिखला दिया कि झारखंड में आदिवासी कहलाना अपने आप में एक गर्व की बात है और उन्हें हर स्तर पर सम्मान मिलना चाहिये। मुबई के कलाकारों ने अच्छी प्रस्तुति दी लेकिन कहीं अगर माटी की सुगंध थी तो वह यह की लोक प्रस्तुतियों में थी। जिन लोगों ने सिर्फ मुबईया कलाकारों के बल पर ही पूरे उद्‌घाटन समारोह को संपन्न करने की सोची थी, यह उनकी एक भारी भूल हो सकती थी। संस्कृति अपने आप में एक बहुत बड़ी चीज होती है। आधुनिकता और नये अविष्कारों का अपना स्थान हो सकता है, लेकिन जिस संस्कृति में प्राचीनता का पुट है, उसकी प्रस्तुति को विश्वसमुदाय आदर की दृष्टि से देखता है।

रांची में राष्ट्रीय खेल संपन्न होना अपने आप में एक बहुत बड़ी घटना है। दिल्ली जिस तरह से कॉमनवेल्थ के खेलों के लिये सज रही थी, करीब उसी प्रकार का उत्साह खेल के अंतिम दिनों में देखने का मिला। रांची अपने आप को पूरी तरह से सजने संवारने में लगी रही। पूरे प्रशासन पर भारी दबाव देखा गया। साफ सफाई से लेकर यातायात व्यवस्था की तैयारियां होती रहीं। पूरे राज्य की इज्जत का सवाल था। खेल 2007 में ही संपन्न हो जाने चाहिये थे। देर हो गयी । हम तैयार नहीं थे। सभी प्रकार की कठिनाईयां थीं। स्थानीय अखबारों ने घोटाले की भी खबर छापी। लेकिन आखिरकार जब खेल अब होने लगे हैं तो कामनवेल्थ खेलों की तरह ही, सभी ने इसको सराहा है।

करीब दस हजार खिलाड़ियों और अधिकारियों का एक साथ आ जाना, इस शहर के लिये आसान बात नहीं है। यहां जब रोज–रोज के जाम से आम लोग परेशान होते हैं, बिजली और पानी आम तौर से निर्बाध नहीं हो पाता है, ऐसे समय में इनको लगातार पूरा करना अपने आप में बड़ी बात हो सकती है। होटल यहां कम

हैं इसलिये जो भी होटल यहां हैं सारे बुक हैं। एयर इंडिया ने सुबह की सेवा दिल्ली से विशेष रूप से दी है जो कि बाद में भी जारी रखा जा सकता है। कई स्पेशल ट्रेन खेलों को ध्यान में रख कर किये गये हैं। ऐसा नहीं कि एकाएक यहां खेलों को संपन्न किया जा रहा है। इसके पूर्व राज्य और संघ स्तरों पर कई खेल संपन्न किये जा चुके हैं। इसलिये पूरी तरह से परखने के बाद ही इन खेलों को यहां तय किया गया है।